

उत्तराध्ययनसूत्र (फोल्डर नंबर ००१२४९)

मुख्य टाइटल	
समर्पण -----	५
प्रकाशकीय -----	७
श्रीमान् सेठ मांगीलालजी सुराणा-जीवन रेखा -----	८
श्री आगम प्रकाशन समिति, ब्यावर -----	१०
आदि वचन -----	११
अनुवादक की कलम से -----	१५
उत्तराध्ययन-एक समीक्षात्मक अध्ययन -----	१९
विषयानुक्रम -----	९६
प्रथम अध्ययन-विनयसूत्र	
अध्ययनसार -----	३
विनयनिरूपण-प्रतिज्ञा -----	६
अविनीत दुःशील का स्वभाव -----	८
विनय का उपदेश और परिणाम -----	९
अनुशासनरूप विनय की दशसूत्री -----	९
अविनीत और विनीत शिष्य का स्वभाव -----	११
विनीत का वाणीविवेक -----	१३
आत्मदमन और परदमन का अन्तर एवं फल -----	१३
अनाशतना विनय के मूल मन्त्र -----	१४
विनीत शिष्य को सूत्र-अर्थ-तदुभय बताने का विधान -----	१६
विनीत शिष्य द्वारा करणीय भाषाविवेक -----	१७
अकेली नारी के साथ अवस्थान-संलाप-निषेध -----	१७
विनीत के लिए अनुशासन-स्वीकार का विधान -----	१८
विनीत की गुरुसमक्ष बैठने की विधि -----	१९
यथाकाल चर्या का निर्देश -----	१९
भिक्षाग्रहण एवं आहारसेवन की विधि -----	२०
विनीत और अविनीत शिष्य के स्वभाव एवं आचरण से गुरु प्रसन्न और अप्रसन्न -----	२२
विनीत को लौकिक और लोकोत्तर लाभ -----	२४
द्वितीय अध्ययन-परीषह प्रविभक्ति	
अध्ययनसार -----	२७
परीषह और उनके प्रकार-संक्षेप में -----	२९
भगवत्प्ररूपित परीषहविभाग-कथन की प्रतिज्ञा -----	३०
(१) क्षुधापरीषह -----	३१

(२) पिपासापरीषह	३२
(३) शीतपरीषह	३३
(४) उष्णपरीषह	३४
(५) दंशमशकपरीषह	३६
(६) अचेलपरीषह	३७
(७) अरतिपरीषह	३८
(८) स्त्रीपरीषह	४०
(९) चर्या परीषहा	४१
(१०) निषद्यापरीषह	४२
(११) शय्यापरीषह	४२
(१२) आक्रोशपरीषह	४४
(१३) वधपरीषह	४६
(१४) याचनापरीषह	४७
(१५) अलाभपरीषह	४८
(१६) रोगपरीषह	४८
(१७) तृणस्पर्शपरीषह	४९
(१८) जल्लपरीषह	५०
(१९) सत्कार-पुरस्कारपरीषह	५१
(२०) प्रज्ञापरीषह	५२
(२१) अज्ञानपरीषह	५३
(२२) दर्शनपरीषह	५४
उपसंहार	
तृतीय अध्ययन-चतुरंगीय	
अध्ययन-सार	५६
महादुर्लभ चार अंग	५९
मनुष्यत्व-दुर्लभता के दस दृष्टान्त	६०
धर्मश्रवण की दुर्लभता	६३
धर्मश्रद्धा की दुर्लभता	६३
संयम में पुरुषार्थ की दुर्लभता	६७
दुर्लभ चतुरंग की प्राप्ति का अनन्तर फल	६७
दुर्लभ चतुरंग की प्राप्ति का परम्परा फल	६९
चतुर्थ अध्ययन-असंस्कृत	
अध्ययन-सार	७२
असंस्कृत जीवन और प्रमाद त्याग की प्रतिज्ञा	७५
प्रमत्तकृत विविध पापकर्मों के परिणाम	७६

जीवन के प्रारम्भ से अन्त तक प्रतिक्षण अप्रमाद का उपदेश-----	७७
विषयों के प्रति रागद्वेष एवं कषायों से आत्मरक्षा की प्रेरणा-----	७९
अधर्मी जनों से सदा दूर रह कर अन्तिम समय तक आत्मगुणाराधना करे-----	८०
पंचम अध्ययन-अकाममरणीय	
अध्ययन-सार-----	८१
मरण के दो प्रकारों का निरूपण-----	८५
अकाममरण-स्वरूप, अधिकारी, स्वभाव और दुष्परिणाम-----	८६
सकाममरण-स्वरूप, अधिकारी-अनधिकारी एवं सकाममरणोत्तर स्थिति-----	९०
सकाममरण प्राप्त करने का उपदेश और उपाय-----	९६
छठा अध्ययन-निर्गन्थीय	
अध्ययन-सार-----	९८
अविद्या-दुःखजननी और अनन्तसंसारभ्रमणकारिणी-----	१००
अविद्या के विविध रूपों को त्यागने का उपदेश-----	१०१
अविद्याजनित मान्यताएँ-----	१०४
विविध प्रमादों से बचकर अप्रमत्त रहने की प्रेरणा-----	१०५
अप्रमत्तशिरोमणि भगवान् महावीर द्वारा कथित अप्रमादोपदेश-----	१०८
सप्तम अध्ययन-उरभ्रीय	
अध्ययन-सार-----	११०
क्षणिक सुखों के विषय में अल्पजीवी परिपुष्ट मेंढे का रूपक-----	११२
नरकाकांक्षी एवं मरणकाल में शोकग्रस्त जीव की दशा मेंढे के समान-----	११३
अल्पकालिक सुखों के लिए दीर्घकालिक सुखों को हारने वाले...-----	११५
तीन वणिकों का दृष्टान्त-----	११७
मनुष्यभव सम्बन्धी कामभोगों की दिव्य कामभोगों के साथ तुलना-----	१२०
बाल और पण्डित का दर्शन तथा पण्डितभाव स्वीकार करने की प्रेरणा-----	१२२
अष्टम अध्ययन-कापिलीय	
अध्ययन-सार-----	१२३
दुःखबहुल संसार में दुर्गतिनिवारक अनुष्ठान की जिज्ञासा-----	१२५
कपिल मुनि द्वारा पांच सौ चोरों को अनासक्ति का उपदेश-----	१२५
हिंसा से सर्वथा विरत होने का उपदेश-----	१२८
रसासक्ति से दूर रह कर एषणासमितिपूर्वक आहारग्रहण-सेवन का उपदेश-----	१२९
समाधियोग से भ्रष्ट श्रमण और उसका दूरगामी दुष्परिणाम-----	१३०
दुष्पूर लोभवृत्ति का स्वरूप और त्याग की प्रेरणा-----	१३१
स्त्रियों के प्रति आसक्तित्याग का उपदेश-----	१३२
नवम अध्ययन-नमिप्रव्रज्या	
अध्ययनसार-----	१३४

नमिराज-जन्म से अभिनिष्क्रमण तक-----	१३८
प्रथम प्रश्नोत्तर-मिथिला में कोलाहल का कारण -----	१४०
द्वितीय प्रश्नोत्तर-जलते हुए अन्तःपुरप्रेक्षण संबंधी-----	१४२
तृतीय प्रश्नोत्तर-नगर को सुरक्षित एवं अजेय बनाने के संबंध में-----	१४३
चतुर्थ प्रश्नोत्तर-प्रासादादि निर्माण कराने के संबंध में-----	१४५
पंचम प्रश्नोत्तर-चोर-डाकुओं से नगररक्षा के संबंध में-----	१४६
छठा प्रश्नोत्तर-उद्दण्ड राजाओं को वश में करने के संबंध में-----	१४८
सप्तम प्रश्नोत्तर-यज्ञ, ब्राह्मणभोजन, दान और भोग के संबंध में-----	१४९
अष्टम प्रश्नोत्तर-गृहस्थाश्रम में ही धर्मसाधना के संबंध में-----	१५१
नवम अध्ययन-हिरण्यादि तथा भण्डार की वृद्धि करने के संबंध में-----	१५२
दशम प्रश्नोत्तर-प्राप्त कामभोगों को छोड़कर अप्राप्त को पाने की इच्छा...-----	१५४
देवेन्द्र द्वारा असली रूप में स्तुति, प्रशंसा एवं वन्दना-----	१५६
श्रामण्य में सुस्थित नमि राजर्षि और उनके दृष्टान्त द्वारा उपदेश-----	१५७
दशम अध्ययन-द्रुमपत्रक	
अध्ययन-सार-----	१५९
मनुष्यजीवन की नश्वरता, अस्थिरता और अप्रमाद का उद्बोधन-----	१६२
मनुष्यजन्म की दुर्लभता-प्रमादत्याग का उपदेश-----	१६३
मनुष्यजन्मप्राप्ति के बाद भी कई कारणों से धर्माचरण की दुर्लभता...-----	१६५
इन्द्रियबल की क्षीणता एवं प्रमादत्याग का उपदेश-----	१६७
अप्रमाद में बाधक तत्त्वों से दूर रहने का उपदेश-----	१६९
ग्यारहवाँ अध्ययन-बहुश्रुतपूजा	
अध्ययन-सार-----	१७३
अध्ययन का उपक्रम-----	१७५
बहुश्रुत का स्वरूप और माहात्म्य-----	१८०
बहुश्रुतता का फल एवं बहुश्रुतताप्राप्ति का उपाय-----	१८६
बारहवाँ अध्ययन-हरिकेशीय	
अध्ययन-सार-----	१८७
हरिकेश बल मुनि का परिचय-----	१९०
मुनि को देखकर ब्राह्मणों द्वारा अवज्ञा एवं उपहास-----	१९१
यक्ष द्वारा मुनि का परिचयात्मक उत्तर-----	१९३
यज्ञशालाधिपति रुद्रदेव-----	१९४
ब्राह्मणों द्वारा मुनि को मारने-पीटने का आदेश तथा उसका पालन-----	१९७
भद्रा द्वारा कुमारों को समझाना, मुनि का यथार्थ परिचय प्रदान-----	१९७
यक्ष द्वारा कुमारों की दुर्दशा और भद्रा द्वारा पुनः प्रबोध-----	१९८
छात्रों की दुर्दशा से व्याकुल रुद्रदेव द्वारा मुनि से क्षमायाचना तथा...-----	२००

आहारग्रहण के बाद देवों द्वारा पंच दिव्यदृष्टि और...	२०२
मुनि और ब्राह्मणों की यज्ञ-स्नानादि के विषय में चर्चा	२०३
तेरहवाँ अध्ययन-चित्र सम्भूतीय	
अध्ययन-सार	२०७
संभूत और चित्र का पृथक्-पृथक् नगर और कुल में जन्म	२१२
चित्र और संभूत का समागम और पूर्वभवों का स्मरण	२१३
चित्र मुनि और ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती का एक दूसरे को अपनी ओर...	२१४
ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती और चित्र मुनि की गति	२२०
चौदहवाँ अध्ययन-इषुकारीय	
अध्ययन-सार	२२१
प्रस्तुत अध्ययन के छह पात्रों का पूर्वजन्म एवं....	२२४
विरक्त पुरोहितकुमारों की पिता से दीक्षा की अनुमति	२२५
पुरोहित और उसके पुत्रों का संवाद	२२६
प्रबुद्ध पुरोहित, अपनी पत्नी से	२३३
पुरोहित परिवार के दीक्षित होने पर रानी और राजा की प्रतिक्रिया एवं प्रतिबुद्धता	२३६
राजा-रानी की प्रव्रज्या एवं छहों आत्माओं की क्रमशः मुक्ति	२३८
पन्द्रहवाँ अध्ययन-सभिक्षुकम्	
अध्ययन-सार	२४१
भिक्षु के लक्षण-ज्ञान-दर्शन-चारित्रात्मक जीवन के रूप में	२४३
सोलहवाँ अध्ययन-ब्रह्मचर्य समाधिस्थल	
अध्ययन-सार	२५०
दस ब्रह्मचर्य-समाधिस्थान और उनके अभ्यास का निर्देश	२५३
प्रथम ब्रह्मचर्यसमाधिस्थान	२५३
द्वितीय ब्रह्मचर्यसमाधिस्थान	२५५
तृतीय ब्रह्मचर्यसमाधिस्थान	२५६
चतुर्थ ब्रह्मचर्यसमाधिस्थान	२५६
पंचम ब्रह्मचर्यसमाधिस्थान	२५७
छठा ब्रह्मचर्यसमाधिस्थान	२५८
सातवाँ ब्रह्मचर्यसमाधिस्थान	२५९
आठवाँ ब्रह्मचर्यसमाधिस्थान	२५९
नौवाँ ब्रह्मचर्यसमाधिस्थान	२६०
दसवाँ ब्रह्मचर्यसमाधिस्थान	२६१
दस समाधिस्थानों का पद्यरूप में विवरण	२६२
आत्मान्वेषक ब्रह्मचर्यनिष्ठ के लिए दस तालपुट समान	२६४
ब्रह्मचर्य-समाधिमान् के लिए कर्तव्यप्रेरणा	२६५

ब्रह्मचर्य-महिमा-----	२६६
सत्रहवाँ अध्ययन-पापश्रमणीय	
अध्ययन-सार-----	२६७
पापश्रमण-ज्ञानाचर में प्रमादी-----	२६८
दर्शनाचार में प्रमादी-पापश्रमण-----	२६९
चारित्राचार में प्रमादी-पापश्रमण-----	२६९
तप-आचार में प्रमादी-पापश्रमण-----	२७१
वीर्याचार में प्रमादी-पापश्रमण-----	२७२
सुविहित श्रमण द्वारा उभयलोकाराधना-----	२७३
अठारहवाँ अध्ययन-संजयीय	
अध्ययन-सार-----	२७५
संजय राजा का शिकार के लिए प्रस्थान एवं मृगवध-----	२७६
ध्यानस्थ अनगर के समीप राजा द्वारा मृगवध-----	२७६
मुनि को देखते ही राजा द्वारा पश्चात्ताप और क्षमायाचना-----	२७७
मुनि के मौन से राजा की भयाकुलता-----	२७८
मुनि के द्वारा अभयदान, अनासक्ति एवं अनित्यता आदि का उपदेश-----	२७८
विरक्त संजय राजा जिनशासन में प्रव्रजित-----	२८०
क्षत्रिय मुनि द्वारा संजय राजर्षि से प्रश्न-----	२८०
संजय राजर्षि द्वारा परिचयात्मक उत्तर-----	२८२
क्षत्रिय मुनि द्वारा क्रियावादी आदि के विषय में चर्चा-विचारणा-----	२८२
परलोक के अस्तित्व का प्रमाण-अपने अनुभव से-----	२८४
क्षत्रिय मुनि द्वारा क्रियावाद से सम्बन्धित उपदेश-----	२८५
भरत चक्रवर्ती इसी उपदेश से प्रव्रजित हुए-----	२८६
सगर चक्रवर्ती को संयमसाधना से निर्वाणप्राप्ति-----	२८७
चक्रवर्ती मघवा ने प्रव्रज्या अंगीकार की-----	२८८
सनत्कुमार चक्रवर्ती द्वारा तपश्चरण-----	२८८
शान्तिनाथ चक्रवर्ती को अनुत्तरगति-प्राप्ति-----	२९०
कुन्थुनाथ की अनुत्तरगति-प्राप्ति-----	२९१
अरनाथ की संक्षिप्त जीवनगाथा-----	२९१
महापद्म चक्रवर्ती द्वारा तपश्चरण-----	२९२
हरिषेण चक्रवर्ती-----	२९३
जय चक्रवर्ती ने मोक्ष प्राप्त किया-----	२९४
दशार्णभद्र राजा का निष्क्रमण-----	२९४
नमि राजर्षि की धर्म में सुस्थिरता-----	२९५
चार प्रत्येकबुद्ध जिनशासन में प्रव्रजित हुए-----	२९५

सौवीरनृप उदायन-----	२९९
काशीराज द्वारा कर्मक्षय-----	३००
विजय राजा राज्य त्याग कर प्रव्रजित-----	३०१
महाबल राजर्षि ने सिद्धिपद प्राप्त किया-----	३०१
क्षत्रिय मुनि द्वारा सिद्धान्तसम्मत उपदेश-----	३०२
उन्नीसवाँ अध्ययन-मृगापुत्रीय	
अध्ययन-सार-----	३०४
मृगापुत्र का परिचय-----	३०६
मुनि को देखकर म-गापुत्र को पूर्वजन्म का स्मरण-----	३०७
विरक्त म-गापुत्र द्वारा दीक्षा की अनुज्ञा-याचना-----	३०८
मृगापुत्र की वैराग्यमूलक उक्तियाँ-----	३०९
माता-पिता द्वारा श्रमणधर्म की कठोरता बताकर उससे विमुख करने का उपाय-----	३१२
मृगापुत्र द्वारा नरक के अनन्त दुःखों के अनुभव का निरूपण-----	३१६
माता-पिता द्वारा अनुमति, किन्तु चिकित्सा-समस्या प्रस्तुत-----	३२४
मृगापुत्र द्वारा मृगचर्या से निष्प्रतिकर्मता का समर्थन-----	३२४
संयम की अनुमति और मृगचर्या का संकल्प-----	३२५
मृगापुत्र श्रमण निर्गन्थ रूप में-----	३२७
महर्षि मृगापुत्र अनुत्तर सिद्धिप्राप्त-----	३२९
महर्षि मृगापुत्र के चारित्र से प्रेरणा-----	३३०
बीसवाँ अध्ययन-महानिर्गन्थीय	
अध्ययन सार-----	३३१
अध्ययन का प्रारम्भ-----	३३३
मुनिदर्शनानन्तर श्रेणिक राजा की जिज्ञासा-----	३३३
मुनि और राजा के सनाथ-अनाथ सम्बन्धी प्रश्नोत्तर-----	३३५
मुनि द्वारा अपनी अनाथता का प्रतिपादन-----	३३८
अनाथता से सनाथताप्राप्ति की कथा-----	३४१
अन्य प्रकार की अनाथता-----	३४३
महानिर्गन्थपथ पर चलने का निर्देश और उसका महाफल-----	३४८
संतुष्ट एवं प्रभावित श्रेणिक राजा द्वारा महिमागानादि-----	३४९
इक्कीसवाँ अध्ययन-समुद्रपालीय	
अध्ययन-सार-----	३५१
पालित श्रावक और पिहुण्ड नगर में व्यापार निमित्त निवास-----	३५३
पिहुण्ड नगर में विवाह, समुद्रपाल का जन्म-----	३५४
समुद्रपाल का संवर्द्धन, शिक्षण एवं पाणिग्रहण-----	३५४
समुद्रपाल की विरक्ति और दीक्षा-----	३५५

महर्षि समुद्रपाल द्वारा आत्मा को स्वयं स्फुरति मुनिधर्मशिक्षा -----	३५६
उपसंहार-----	३६१
बाईसवाँ अध्ययन-रथनेमीय	
अध्ययन-सार-----	३६२
तीर्थंकर अरिष्टनेमि का परिचय-----	३६४
राजीमती के साथ वाग्दान, बरात के साथ प्रस्थान-----	३६५
अवरुद्ध आर्त पशु-पक्षियों को देखकर करुणामग्न अरिष्टनेमि-----	३६८
अरिष्टनेमि द्वारा प्रव्रज्याग्रहण-----	३७०
प्रथम शोकमग्न और तत्पश्चात् प्रव्रजित राजीमती-----	३७२
राजीमती द्वारा भग्नचित रथनेमि का संयम में स्थिरीकरण-----	३७४
रथनेमि पुनः संयम में दृढ-----	३७९
उपसंहार-----	
तेईसवाँ अध्ययन-केशी गौतमीय	
अध्ययन-सार-----	३८०
पार्श्व जिन और उनके शिष्य केशी श्रमण-संक्षिप्त परिचय-----	३८३
भगवान् महावीर और उनके शिष्य गौतम-संक्षिप्त परिचय-----	३८४
दोनों शिष्यसंघों में धर्मविषयक अन्तर सम्बन्धी शंकाएँ-----	३८५
दोनों का मिलन - क्यों और कैसे-----	३८८
प्रथम प्रश्नोत्तर-चातुर्यामधर्म और पंचमहाव्रतधर्म में अन्तर का कारण-----	३९०
द्वितीय प्रश्नोत्तर-अचेलक और विशिष्टचेलक धर्म के अन्तर का कारण-----	३९२
तृतीय प्रश्नोत्तर-शत्रुओं पर विजय के सम्बन्ध में-----	३९३
चतुर्थ प्रश्नोत्तर-पाशबन्धों को तोड़ने के सम्बन्ध में-----	३९५
पंचम प्रश्नोत्तर-तृष्णारूपी लता को उखाड़ने के सम्बन्ध में-----	३९६
छठा प्रश्नोत्तर-कषायाग्नि बुझाने के सम्बन्ध में-----	३९७
सातवाँ प्रश्नोत्तर-मनोनिग्रह के सम्बन्ध में-----	३९८
आठवाँ प्रश्नोत्तर-कुपथ-सत्पथ के विषय में-----	३९९
नौवाँ प्रश्नोत्तर-धर्मरूपी महाद्वीप के सम्बन्ध में-----	४००
दसवाँ प्रश्नोत्तर-महासमुद्र को नौका से पार करने के सम्बन्ध में-----	४०२
ग्यारहवाँ प्रश्नोत्तर-अन्धकाराच्छन्न लोक में प्रकाश करने वाले के सम्बन्ध में-----	४०३
बारहवाँ प्रश्नोत्तर-क्षेम, शिव और अनाबाध स्थान के विषय में-----	४०४
केशी कुमार द्वारा गौतम को अभिवन्दन एवं पंचमहाव्रतधर्म स्वीकार-----	४०६
उपसंहार-दो महामुनियों के समागम का फल-----	४०६
चौबीसवाँ अध्ययन-प्रवचनमाता	
अध्ययन-सार-----	४०८
अष्ट प्रवचनमाताएँ-----	४१०

चार कारणों से परिशुद्धि-ईर्यासमिति -----	४११
भाषासमिति-----	४१३
एषणासमिति -----	४१३
आदान-निक्षेपणसमिति-विधइ-----	४१४
परिष्ठापना समिति-प्रकार और विधि -----	४१५
समिति का उपसंहार और गुप्तियों का प्रारम्भ-----	४१६
मनोगुप्ति-प्रकार और विधि-----	४१६
वचनगुप्ति-प्रकार और विधि-----	४१७
कायगुप्ति-प्रकार और विधि-----	४१८
समिति और गुप्ति में अन्तर-----	४१८
प्रवचनमाताओं के आचरण का सुफल-----	४१९
पच्चीसवाँ अध्ययन-यज्ञीय	
अध्ययन-सार-----	४२०
जयघोष-ब्राह्मण से यमयायाजी महामुनि-----	४२१
जयघोष मुनि विजयघोष के यज्ञ में-----	४२२
यज्ञकर्ता द्वारा भिक्षादान का निषेध एवं मुनि की प्रतिक्रिया-----	४२२
जयघोष मुनि द्वारा विमोक्षणार्थ उत्तर-----	४२४
विजयघोष ब्राह्मण द्वारा जयघोष मुनि से प्रतिप्रश्न-----	४२५
जयघोष मुनि द्वारा समाधान-----	४२५
सच्चे ब्राह्मण के लक्षण-----	४२७
मीमांसकमान्य वेद और यज्ञ आत्मरक्षक नहीं-----	४२९
श्रमण-ब्राह्मणादि किन गुणों से होते हैं, किनसे नहीं-----	४२९
विजयघोष द्वारा कृतज्ञताप्रकाशन एवं गुणगान-----	४३१
जयघोष मुनि द्वारा वैराग्यमय उपदेश-----	४३१
विरक्ति, दीक्षा और सिद्धि-----	४३२
छत्वीसवाँ अध्ययन-सामाचारी	
अध्ययन-सार-----	४३४
सामाचारी और उसके दश प्रकार-----	४३६
दशविध सामाचारी का प्रयोजनात्मक स्वरूप-----	४३७
दिन के चार भागों में उत्तरगुणात्मक दिनचर्या-----	४३९
पौरुषी का कालपरिज्ञान-----	४४१
औत्सर्गिक रात्रिचर्या-----	४४१
विशेष दिनचर्या-----	४४३
प्रतिलेखना संबंधी विधि-निषेध-----	४४४
तृतीय पौरुषी का कार्यक्रम-भिक्षाचर्या-----	४४८

चतुर्थ पौरुषी का कार्यक्रम -----	४५०
दैवसिक कार्यकर्म -----	४५१
रात्रिक चर्या और प्रतिक्रमण -----	४५२
उपसंहार-----	४५४
सत्ताईसवाँ अध्ययन-खलुंकीय	
अध्ययन-सार -----	४५५
गार्ग्य मुनि का परिचय -----	४५६
अविनीत शिष्य दुष्ट वृषभों से उपमित -----	४५७
आचार्य गार्ग्य का चिन्तन -----	४५९
कुशिष्यों का त्याग करके तपःसाधना में संलग्न गार्ग्याचार्य-----	४६१
अट्ठाईसवाँ अध्ययन-मोक्षमार्गगति	
अध्ययन-सार -----	४६३
मोक्षमार्गगति-माहात्म्य और स्वरूप -----	४६४
ज्ञान और उसके प्रकार-----	४६५
द्रव्य, गुण और पर्याय का लक्षण-----	४६६
नौ तत्त्व और सम्यक्त्व का लक्षण -----	४७२
दशविध रुचिरूप सम्यक्त्व के दश प्रकार-----	४७५
सम्यक्त्वश्रद्धा के स्थायित्व के तीन उपाय-----	४७७
सम्यग्दर्शन की महत्ता-----	४७७
सम्यक्त्व के आठ अंग-----	४७८
चारित्र-स्वरूप और प्रकार-----	४८१
सम्यक् तप-भेद-प्रबेद-----	४८३
मोक्ष प्राप्ति के लीये चार उपयोगीता -----	४८३
उनतीसवाँ अध्ययन-सम्यक्त्वपराक्रम	
अध्ययन-सार -----	४८४
सम्यक्त्वपराक्रम से निर्वाणप्राप्ति-----	४८५
संवेग का फल-----	४८७
निर्वेद से लाभ-----	४८८
धर्मश्रद्धा का फल-----	४८९
गुरु-साधर्मिक-शुश्रूषा का फल-----	४९०
आलोचना से उपलब्धि -----	४९१
(आत्म) निन्दना से लाभ -----	४९२
गर्हणा से लाभ -----	४९३
सामायिकादि षडावश्यक से लाभ-----	४९४
स्तव-स्तुतिमंगल से लाभ-----	४९६

काल-प्रतिलेखना से उपलब्धि-----	४९६
प्रायश्चित्तकरण से लाभ-----	४९७
क्षमापणा से लाभ-----	४९७
स्वाध्याय एवं उसके अंगों से लाभ-----	४९८
एकाग्र मन की उपलब्धि-----	५०१
संयम, तप और व्यवदान के फल-----	५०१
सुखशात का परिणाम-----	५०२
अप्रतिबद्धता से लाभ-----	५०२
विविक्त शय्यासन से लाभ-----	५०३
विनिवर्तना-लाभ-----	५०३
प्रत्याख्यान की नवसूत्री-----	५०४
प्रतिरूपता का परिणाम-----	५०८
वैयावृत्य से लाभ-----	५०९
सर्वगुणसम्पन्नता से लाभ-----	५०९
वीतरागता का परिणाम-----	५१०
क्षान्ति, मुक्ति, आर्जव एवं मार्दव से उपलब्धि-----	५१०
भाव-करण-योगसत्य का परिणाम-----	५१२
गुप्ति की साधना का परिणाम-----	५१३
मन-वचन-कायसमाधारणता का परिणाम-----	५१४
ज्ञान-दर्शन-चारित्रसम्पन्नता का परिणाम-----	५१५
पाँचों इन्द्रियों के निग्रह का परिणाम-----	५१७
कषायविजय एवं प्रेय-द्वेष-मिथ्यादर्शनविजय का परिणाम-----	५१९
केवली के योगनिरोध का क्रम-----	५२२
मोक्ष की ओर जीव की गति एवं स्थिति का निरूपण-----	५२३
तीसवाँ अध्ययन-तपोमार्गगति	
अध्ययन-सार-----	५२५
तप द्वारा कर्मक्षय की पद्धति-----	५२६
तप के भेद-प्रभेद-----	५२७
बाह्य तप-प्रकार, अनशन के भेद-प्रभेद-----	५२९
अवमौदर्य (ऊनोदरी) तप-स्वरूप और प्रकार-----	५३३
भिक्षाचर्यातप-----	५३६
रसपरित्यागतप-एक अनुचिन्तन-----	५३७
कायक्लेशतप-----	५३८
विविक्तशय्यासन-प्रतिसंलीनतारूप तप-----	५४०
आभ्यन्तर तप और उसके प्रकार-----	५४१

प्रायश्चित्त-स्वरूप और प्रकार-----	५४२
विनयतप-स्वरूप और प्रकार-----	५४३
वैयावृत्य का स्वरूप-----	५४४
स्वाध्याय-स्वरूप और प्रकार-----	५४५
ध्यान-लक्षण और प्रकार-----	५४६
व्युत्सर्ग-स्वरूप और विश्लेषण-----	५४८
द्विविध तप का फल-----	५५१
इकतीसवाँ अध्ययन-चरणविधि	
अध्ययन-सार-----	५५२
चरणविधि के सेवन का परिणाम-----	५५३
चरणविधि की संक्षिप्त झांकी-----	५५३
दो प्रकार के पापकर्मबन्धन से निवृत्ति-----	५५३
तीन बोल-दण्ड, गौरव, शल्य-----	५५४
चार बोल-विकथा, कषाय, संज्ञा, ध्यान-----	५५५
पाँच बोल-व्रत, इन्द्रियविषय, समिति, क्रिया-----	५५६
छह बोल-लेश्या, काय, आहार के कारण-----	५५७
सात बोल-पिण्डावग्रह प्रतिमा, भयस्थान-----	५५८
ग्यारहवाँ बोल-बारहवाँ बोल-उपासकप्रतिमा, भिक्षुप्रतिमा-----	५६०
तेरह-चौदह-पन्द्रहवाँ बोल-क्रियास्थान, भूतग्राम, परमाधार्मिक देव-----	५६१
सोलह-सत्रहवाँ बोल-गाथाषोडशक, असंयम-----	५६२
अठारह-उन्नीस-बीसवाँ बोल-ब्रह्मचर्य, ज्ञाताध्ययन, असमाधिस्थान-----	५६२
इक्कीस-बाईसवाँ बोल-शबलदोष, परीषह-----	५६३
तेईस-चौबीसवाँ बोल-सूत्रकृतांग-अध्ययन, देवगण-----	५६४
पच्चीस-छत्वीसवाँ बोल-भावनाएं, दसाश्रुतस्कन्धादि के उद्देशक-----	५६५
सत्ताईस-अट्ठाईसवाँ बोल-अनगारगुम, आचारप्रकल्प के अध्ययन-----	५६६
उनतीस-तीसवाँ बोल-पापश्रुतप्रसंग, मोहनीयस्थान-----	५६७
इकतीस-बत्तीस-तेतीसवाँ बोल-सिद्धगुण, योगसंग्रह, आशातना-----	५६८
पूर्वोक्त तेतीस स्थानों के आचरण का फल-----	५७०
बत्तीसवाँ अध्ययन-प्रमादस्थान	
अध्ययन-सार-----	५७१
सर्वदुःखमुक्ति के उपाय कथन की प्रतिज्ञा-----	५७२
ज्ञानादिप्राप्तिरूप समाधि के लिए कर्तव्य-----	५७३
दुःख की परम्परागत उत्पत्ति-----	५७४
राग-द्वेष के उन्मूलन का प्रथम उपाय-अतिभोजनत्याग-----	५७५
कामभोग-दुःखों के हेतु-----	५७८

मनोज-अमनोज रूपों में राग-द्वेष से दूर रहे -----	५७९
मनोज-अमनोज शब्दों के प्रति राग-द्वेषमुक्त रहने का निर्देश-----	५८२
मनोज-अमनोज गन्ध के प्रति राग-द्वेषमुक्त रहने का निर्देश-----	५८५
मनोज-अमनोज रस के प्रति राग-द्वेषमुक्त रहने का निर्देश-----	५८७
मनोज-अमनोज स्पर्शों के प्रति राग-द्वेषमुक्त रहने का निर्देश-----	५८९
मनोज-अमनोज भावों के प्रति राग-द्वेषमुक्त रहने का निर्देश-----	५९१
रागी के लिए ही ये दुःख के कारण, वीतरागी के लिए नहीं-----	५९४
राग-द्वेषादि विकारों के प्रवेशस्रोतों से सावधान रहें-----	५९५
अपने ही संकल्प-विकल्प-दोषों के हेतु-----	५९५
वीतरागी की सर्व कर्मों और दुःखों से मुक्ति का क्रम-----	५९६
उपसंहार-----	५९७
तेतीसवाँ अध्ययन-कर्मप्रकृति	
अध्ययन-सार-----	५९८
कर्मबन्ध और कर्मों के नाम-----	५९९
आठ कर्मों की उत्तरप्रकृतियाँ-----	६००
कर्मों के प्रदेशाग्र, क्षेत्र, काल और भाव-----	६०४
उपसंहार-----	
चौतीसवाँ अध्ययन-लेश्या	
अध्ययन-सार-----	६०८
अध्ययन का उपक्रम-----	६१०
नामद्वार-----	६११
वर्णद्वार-----	६११
रसद्वार-----	६१२
गंधद्वार-----	६१३
स्पर्शद्वार-----	६१३
परिणामद्वार-----	६१४
लक्षणद्वार-----	६१४
स्थानद्वार-----	६१६
स्थितिद्वार-----	६१७
गतिद्वार-----	६२१
आयुष्यद्वार-----	६२१
उपसंहार-----	६२२
पैंतीसवाँ अध्ययन-अनगार मार्गगति	
अध्ययन-सार-----	६२३
उपक्रम-----	६२५

संगों को जान कर त्यागे -----	६२५
हिंसादि आस्रवों का परित्याग-----	६२५
अनगार का निवास और गृहकर्मसमारम्भ-----	६२६
भोजन पकाने और पकवाने का निषेध-----	६२७
क्रय-विक्रय का निषेध-भिक्षा और भोजन की विधि-----	६२८
पूजा-सत्कार आदि से दूर-----	६२९
शुक्लध्यानलीन, अनिदान, अकिंचन-मुनि-----	६२९
अन्तिम आराधना से दु-खमुक्ति मुनि-----	६२९
छत्तीसवाँ अध्ययन-जीवाजीवविभक्ति	
अध्ययन-सार-----	६३१
अध्ययन का उपक्रम और लाभ-----	६३३
अजीवनिरूपण-----	६३४
अरूपी-अजीव-निरूपण-----	६३४
रूपी-अजीव-निरूपण-----	६३६
जीव-निरूपण-----	६४२
सिद्ध-जीव-निरूपण-----	६४३
संसारस्थ जीव-----	६४८
स्थावर जीव और पृथ्वीकायनिरूपण-----	६४९
अप्कायनिरूपण-----	६५२
वनस्पतिकायनिरूपण-----	६५३
त्रसकाय के तीन भेद-----	६५६
तेजस्कायनिरूपण-----	६५६
वायुकायनिरूपण-----	६५८
उदार त्रसकायनिरूपण-----	६५९
द्वीन्द्रिय त्रस-----	६६०
त्रीन्द्रिय त्रस-----	६६१
चतुरिन्द्रिय त्रस-----	६६२
पंचेन्द्रियत्रसनिरूपण-----	६६४
नारक जीव-----	६६४
पंचेन्द्रिय तिर्यञ्च त्रस-----	६६६
जलचर त्रस-----	६६७
स्थलचर त्रस-----	६६८
खेचर त्रस-----	६६९
मनुष्यनिरूपण-----	६७१
देवनिरूपण-----	६७३

उपसंहार-----	६७९
अन्तिम साधना-संलेखना का विधिविधान-----	६८०
मरणविराधना-मरण आराधना-भावनाएँ-----	६८२
कान्दर्पी आदि अप्रशस्तभावनाएँ-----	६८४
उपसंहार-----	
परिशिष्ट	
परिशिष्ट-१ – उत्तराध्ययन की कतिपय सूक्तियाँ-----	६८८
परिशिष्ट-२ – गाथानुक्रमणिका-----	७०४
अन्ध्यायकाल-----	७२६